जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

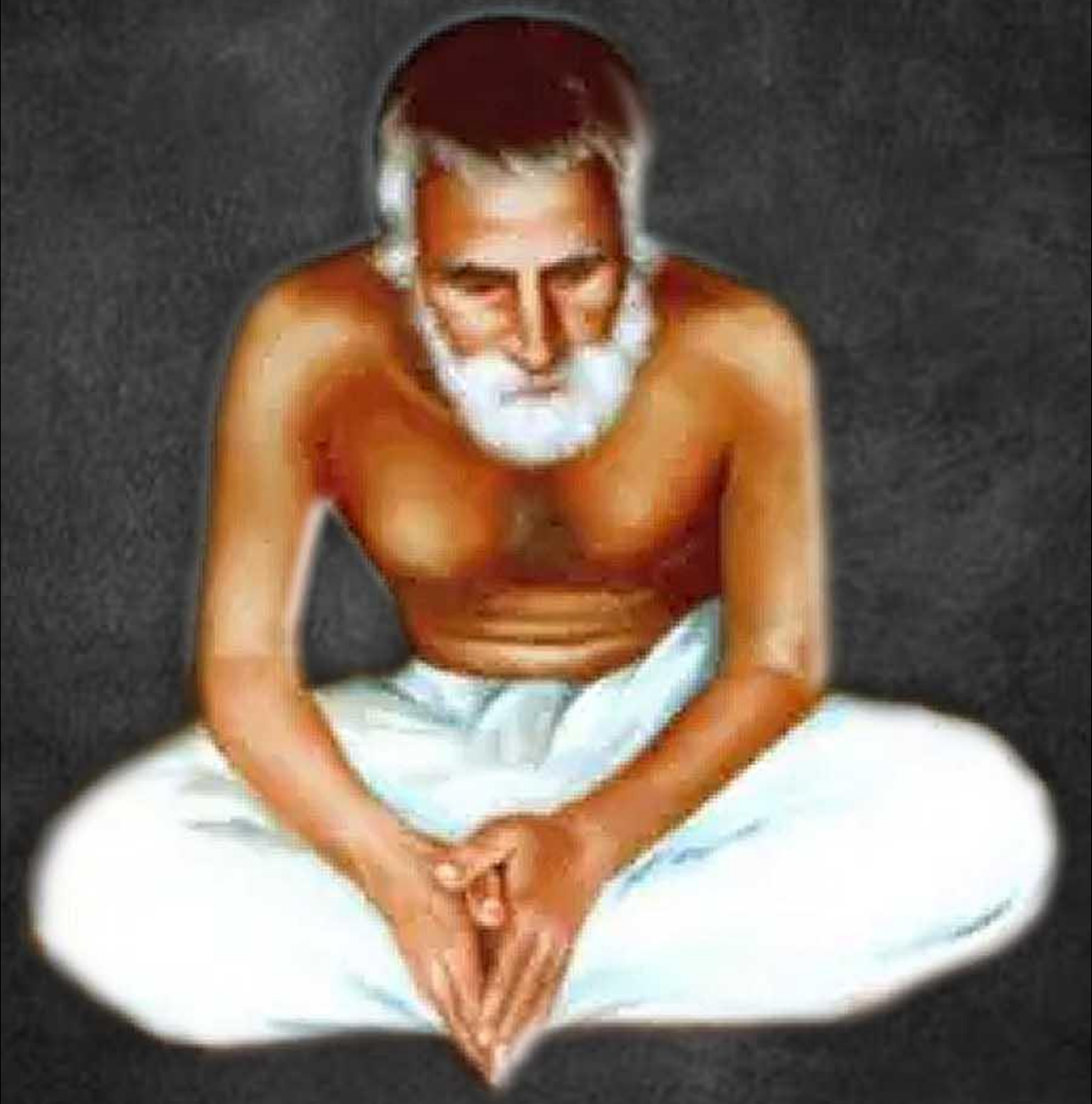

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

वैष्णव को कैसे पहचानें ?

श्रीलगुरुदेव

किसी एक व्यक्ति ने एक दिन श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज से पूछा, - पूछा,— "हमने श्रीमद् भागवत आदि शास्त्रों में वैष्णवों के सब लक्षणों के विषय में पढ़ा है। जिनका नाम हम 'परम वैष्णव' के रूप में सुनते हैं, उनमें से किसी किसी वैष्णव के चरित्र के साथ वह लक्षण मिलते नहीं हैं। यहाँ तक कि इन सब महात्मा - वैष्णवों में शास्त्रीय लक्षणों के विपरीत लक्षण

भी देखने को मिलते हैं। अतएव जिससे हम आसानी से निस्सन्देह होकर शुद्ध वैष्णव को पहचान सकें, कृपा कर उस प्रकार का उपदेश प्रदान कीजिए।"

बाबाजी महाराज ने कहा, – "जब शुद्ध वैष्णव अपनी इच्छा और श्रीकृष्ण की प्रेरणा — इन दोनों वृत्तियों के अभूतपूर्व परस्पर मिलन से जगत में आविर्भूत होते हैं, तब वह परम कारुणिक भागवत, अत्यन्त पतित और बहिर्मुख जीवों के दुःख से दुखित होकर, किसी भी कुल, स्थान और समय पर अपने को

प्रकाशित कर सकते हैं। जब वही महाभागवत जीवों को कृष्णभक्ति से जोड़ने के लिए अपनी प्रेम - भक्ति रूपी सम्पत्ति प्रकाशित कर उन्हें आकर्षित करते हैं, तब भगवान श्रीकृष्ण मन ही मन में आशंका करते हैं कि मेरे प्राणों के समान प्यारे वैष्णवों के प्रति जो समस्त जीव आत्मसमर्पण करते हैं, उन सब व्यक्तियों का ऋण चुकाना मेरे लिए बहुत कठिन होगा। मेरा मन वैष्णवों के शरणागत व्यक्तियों के अधीन हो जाएगा और वे इच्छा मात्र से ही मुझे अपनी पकड़ में कस कर रख सकेंगे।

इस प्रकार की आशंका कर श्रीकृष्ण महान पुरुषों के लक्षणों को साधारण लोगों की दृष्टि से कभी-कभी छिपा देते हैं। कृष्ण इसी प्रकार जीवों की यथार्थ सत्य के प्रति अनुराग की परीक्षा लेकर और अधिक प्रस्फुटित कर देते हैं। कृष्ण की माया शक्ति के प्रभाव से अन्याभिलाषी जीव ऐसा सोच लेते हैं कि यथार्थ वैष्णवों में महान पुरुषों के लक्षण नहीं है, बल्कि उसके विपरीत लक्षण हैं। अतएव परम करुणामय वैष्णवों की अपनी स्वतन्त्र इच्छा के बिना किसी व्यक्ति को वैष्णवों के किसी लक्षण को देखने की या शास्त्रों में वर्णित लक्षणों को देखकर

भी उनके स्वरूप को पहचानने की योग्यता प्राप्त नहीं होती है। कई बार, शुद्ध वैष्णव बहिर्मुख व्यक्ति को मान प्रदान करते हैं। उसको मान देकर उसके संग से यत्नपूर्वक दूर रहते हैं। कभी वे जनसंग के भय से अपने स्वाभाविक लक्षणों को छिपा कर रहते हैं। किसी किसी व्यक्ति को बाहरी दृष्टि से शिष्य बनाने का अभिनय कर, एवं उनके द्वारा सब समय घिरे रहने का अभिनय कर, सभी कार्यों में उसकी राय लेने का अभिनय कर और उसकी सेवा ग्रहण करने का अभिनय करके भी उसके सामने अपने वास्तविक स्वरूप को छिपाकर रखते हैं। मैंने अपनी आँखों

से देखा है कि बजमण्डल में कोई एक भजनानन्दी वैष्णव, श्रीराधाकुण्ड के उत्तर में स्थित दूर किसी एक गाँव में भजन करते थे। विभिन्न प्रकार के दुःखी लोग उनके पास आते और वे महात्मा श्रीकृष्ण से प्रार्थना कर उन लोगों को उनके व्यवहारिक दुःखों से छुटकारा मिलने का आश्वासन देते। क्रमशः उनकी प्रतिष्ठा इतनी बढ़ गई कि सारे लोग उन्हें "सिद्ध बाबाजी" कहकर दिन-रात अत्यंत बेचैन करने लगे। 'वे खूब वैरागी हैं', 'कनक कामिनी प्रतिष्ठाशाहीन हैं', 'जीवों के प्रति दयालु हैं', ‘अदोषदर्शी परम वैष्णव हैं' इस प्रकार महिमा का

प्रचार कर बहुत लोग उन्हें परेशान करने लगे। तब उक्त भजनानन्दी वैष्णव ने किसी एक धनी व्यक्ति से मासिक कुछ नियमित धन लेकर उस धन से एक भंगी की जवान पत्नी को अपनी कुटिया के सामने पूरे दिनभर के लिए बैठा दिया। यह देखकर सारे लोग इस वैष्णव को स्त्री - संगी, अर्थ - लोभी आदि समझकर निन्दा करने लगे। और बहुत सारे लोगों ने यह देखा कि इस भजनानन्दी महात्मा से कोई जागतिक फल प्राप्त नहीं हो रहा है, इनके पास आना-जाना भी बन्द कर दिया । वस्तुतः वे शुद्ध वैष्णव थे। वैष्णव जब कृपा करके आत्म प्रकाश

करते हैं, तब श्रद्धावान व्यक्ति वैष्णवों की करुणा से आकर्षित होकर, शरणागति के फल से, वैष्णवों के वास्तविक स्वरूप का दर्शन कर पाते हैं। अति भाग्यवान व्यक्ति ही वैष्णवों की सेवा और कृपा से वंचित नहीं होते, अन्यथा वैष्णव अपने आपको छिपाकर रखने के लिए विभिन्न प्रकार से धोखा देते हैं। वैष्णवों को पहचानने के लिए निरन्तर श्रीगौर - नित्यानन्द के श्रीचरणों में निष्कपट कातर प्रार्थना करते रहने से एवं श्रीगौर नित्यानन्द जी की कृपा से हृदय दम्भहीन (अहंकार शून्य) और दीन होने से निताई गौर ही उस हृदय में वैष्णवों के स्वरूप को

प्रकाशित कर देते हैं। वैष्णव निताई - गौर को मिला देते हैं और फिर निताई- गौर भी वैष्णवों की पहचान करवा देते हैं। तभी श्रीचैतन्य चरितामृत में श्रीकृष्णदास कविराज गोस्वामी ने कहा है—

एइ दुई भाइ हृदयेर क्षालि' अन्धकार।
दुइ भागवत - संगे करान साक्षात्कार।

अर्थात् यह दो भाई (श्रीचैतन्य महाप्रभु एवं श्रीमन् नित्यानन्द प्रभु) हृदय के अंधकार को दूर कर देते हैं और दो भागवत –

ग्रन्थ - भागवत और भक्त - भागवत, दोनों से मिला देते हैं। -

श्रीलगुरुदेव